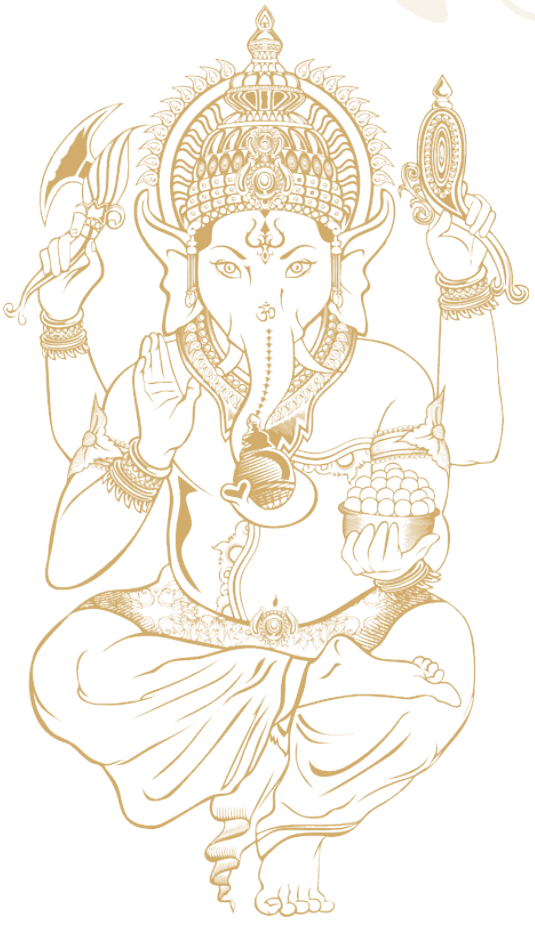

Dimpi Parkhe

14 Aug 2012

04:44 AM

Bhopal

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120424301**

तिथि 14/08/2012 **समय** 04:44:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Bhopal **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:02:16
अक्षांश 23:17:00 उत्तर **रेखांश** 77:28:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:55:00 घं
वेलान्तर	00:04:38 घं
सूर्योदय	05:55:32 घं
सूर्यास्त	18:53:51 घं
चैत्रादि संवत	2069
शक संवत	1934
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	12
नक्षत्र	आर्द्रा
योग	वज्र
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ङ--
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

राहु 8वर्ष 9मा 9दि
गुरु
24/05/2021
24/05/2037

गुरु	13/07/2023
शनि	23/01/2026
बुध	30/04/2028
केतु	06/04/2029
शुक्र	06/12/2031
सूर्य	23/09/2032
चन्द्र	23/01/2034
मंगल	30/12/2034
राहु	24/05/2037

योगिनी

मंगला 0वर्ष 5मा 25दि
भद्रिका
08/02/2022
08/02/2027

भद्रिका	20/10/2022
उल्का	20/08/2023
सिद्धा	09/08/2024
संकटा	19/09/2025
मंगला	09/11/2025
पिंगला	18/02/2026
धान्या	20/07/2026
भ्रामरी	08/02/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			10:54:16	कर्क	पुष्य	3	शनि	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			27:32:48	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	मित्र राशि	1.57	अमात्य	पितृ	क्षेम
चंद्र			13:29:56	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	बुध	मित्र राशि	1.12	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			29:52:03	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	शत्रु राशि	1.19	आत्मा	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			09:16:27	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.14	ज्ञाति	ज्ञाति	विपत
गुरु			18:17:29	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.22	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र			11:50:50	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.21	पुत्र	कलत्र	जन्म
शनि			00:40:22	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	उच्च राशि	1.45	कलत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		07:45:58	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	केतु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		07:45:58	वृष	कृतिका	4	सूर्य	केतु	सम राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

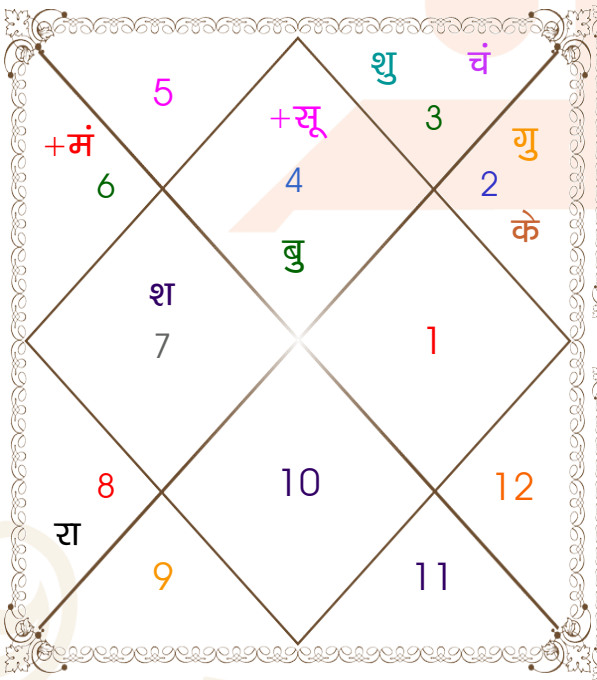

चन्द्र कुंडली

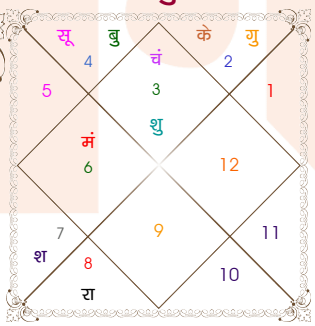

नवमांश कुंडली

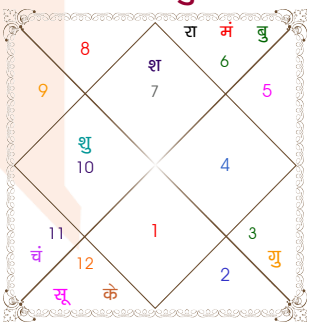

सर्वाष्टकवर्ग

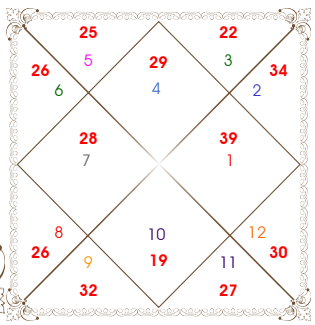

दशमांश कुंडली

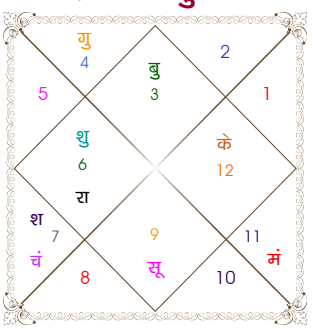

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी श्वान योनि, वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी आद्य तथा गण मनुष्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "ङ" या "ग" होगा। यथा-गरिमा, गायत्री आदि।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगी। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगी साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगी। आप दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगी। समीपस्थ बन्धुओं की आप प्रिय रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगी। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगी तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगी। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगी एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगी। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यों में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यों पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आपका जन्म मिथुन राशि में हुआ है। अतः आप के नेत्र अल्प रक्तमय श्यामवर्ण के तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर पुष्ट एवं स्वस्थ होंगे एवं नासिका भी उन्नत रहेगी। शास्त्राध्ययन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक अध्ययन से आप शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करेंगी। सन्देशों का आदान प्रदान करना या दूतिका का कार्य आपको रूचिकर लगेगा। आप अत्यन्त ही कुशाग्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा इसी तीक्ष्णता के आधार पर अन्य जनों की मन की बात को जानने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपका व्यवहार समाज के लोगों से विनम्र तथा विनयशील रहेगा जिससे आप सबकी प्रशंसा पात्र होंगी। आपकी वाणी अत्यन्त प्रिय एवं मधुर होगी जो श्रोता के मन को प्रसन्नता प्राप्त करेगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य में आप आजीवन निपुण रहेंगी। संगीत आपका अति प्रिय होगा तथा नृत्य शास्त्र की आप ज्ञाता होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योद्गिग द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपकी हथेली में मत्स्याकार चिन्ह होगा तथा शरीर की नसें स्पष्ट दिखाई देंगी। आप की लम्बाई भी पूर्ण होगी। आप अत्यन्त सुन्दर तथा रूपलावण्य से युक्त होंगी। लेखन प्रतिभा से आप नैसर्गिक रूप से ही सम्पन्न रहेंगी तथा साहित्य या शास्त्रों के पठन पाठन तथा लेखन कार्य में पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगी। आप समस्त भौतिक सुखों तथा संसाधनों से जीवन भर युक्त रहेंगी। पुरूष वर्ग को अपने वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगी तथा सौभाग्य

हमेशा आपका साथ देगा।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगी तथा आजीवन हंसने हंसाने के कार्य में सफल एवं निपुण रहेंगी। आपकी इधर उधर घूमने या यात्रादि में भी रूचिशील रहेंगी। घर में रहकर भी आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपके समाज में अत्यन्त विस्तृत संबंध होंगे तथा अपने समाज में आप अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगी। सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। पुरूष वर्ग में आप अत्यन्त प्रिय होंगी तथा उनके प्रति आपका अधिक आकर्षण रहेगा। इसके साथ ही आप अपनी योग्यता से यश तथा सम्मान भी अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

बोलने या लिखने में आपकी भाषा श्लिष्टयुक्त स्पष्ट अर्थ वाली होगी जो सुगमता पूर्वक पाठक या श्रोता ग्रहण कर सकेंगे। आप अपने बन्धु वर्गो तथा समाज के सभी वर्गो की भलाई तथा सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। आपकी प्रकृति पित तथा कफ मिश्रित होगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आप हमेशा नेत्रों की चंचलता से युक्त रहेंगी। नृत्य तथा संगीत के प्रति आप का विशेष आकर्षण होगा तथा इसके प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगी। आप अपनी योग्यता तथा सद्व्यवहार से धनैश्वर्य तथा सुखों का उपभोग करेंगी। भाषण देने की कला में भी आप अत्यन्त दक्ष होंगी। साथ ही आप जिस चीज को मन में एक बार सोच लेंगी उसे पूर्ण करके ही रहेंगी। आप न्यायवादी भी होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।

गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप मनुष्य गण में पैदा हुई हैं। अतः देवता तथा ब्राह्मणों की आप नित्य पूजार्चना करने वाली होंगी तथा इनके प्रति आपके मन में अगाध श्रद्धा का भाव रहेगा। यदा कदा आपके अर्न्तमन में अभिमान का भाव भी जागृत होगा। दया एवं करूणा के भाव से आप युक्त रहेंगी तथा समय समय पर इस भावना का प्रदर्शन करेंगी। आप बलवती होंगी तथा एक से अधिक कलाओं या कार्यो को करने वाली होंगी। आपका शरीर कान्तिमय, सुन्दर तथा स्वस्थ रहेगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अध्ययन से ज्ञान प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके द्वारा बहुत से लोगों को सुख की प्राप्ति भी होगी।

आप आजीवन मान सम्मान तथा सुख संसाधनों का उपभोग करेंगी। नेत्र आपके बड़े होंगे तथा शरीर का आपका गौरवर्ण रहेगा। साथ ही आप नगरवासियों को वश में रखने वाली अथवा नगर की सम्मानित महिला होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

श्वान योनि में जन्म लेने के कारण आप हमेशा कार्य करने में तत्पर रहेंगी तथा आपका मन हमेशा उत्साह से भरा रहेगा परिणाम स्वरूप जो भी कार्य करेंगी उसमें सफलता प्राप्त करेंगी। आप एक निर्भय महिला होंगी तथा निडरता पूर्वक समस्याओं का सामना एवं समाधान करेंगी। लेकिन अपने भाई बन्धुओं के साथ आपका वैमनस्य का भाव रहेगा तथा यदा कदा उनसे झगड़ा भी करेंगी। परन्तु माता पिता की आप आजीवन निस्वार्थ सेवा करने वाली होंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक

स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, चतुष्पाद करण, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र तथा परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय, लेन देन आदि महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय पहर तथा धनु

राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखे।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार अथवा नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः एवं सायं काल नियमित रूप से गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुद्धवार का व्रत भी रखना चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, गुड, घी इत्यादि पदार्थो को किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होकर लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।